Catholic Diocese of Gorakhpur
Bishop's House, Civil Lines,
Gorakhpur - 273 001, Uttar Pradesh, India

P.L. 01/24

14-02-2024

(To be read during the Community Mass on 1st Sunday of the Lent)

ख्रीस्त में मेरे प्रिय पुरोहित–भाइयो, धर्मबहिनो, धर्म–भाइयो, सेमिनारियन्स, विश्वासीगण और प्यारे बच्चो,

मैं आप सबों को त्रियेक ईश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर आर्शीवाद देता हूँ। हम लोग चालीसा काल में प्रवेश कर रहे हैं। यह चालीसा काल ईश्वर हमें अध्यात्मिक रूप से नवीनीकृत होने के लिए प्रदान किया गया है।

चालीसा काल की यह पवित्र अवधि सार्वत्रिक कलीसिया अपनी सन्तानों को ईश्वर में अपने विश्वास और स्वर्गराज्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का मौका देती है। सन्त पापा फ्रांसीस चालीसा काल **2024** के अपने सन्देश में बताते है, '**निर्जनस्थल से गुजरते हुए हम स्वतन्त्रता की ओर बढ़ते हैं।**' संत पापा का यह विचार निर्गमन ग्रन्थ के इस्राएलियों के प्रतिज्ञात देश की ओर प्रस्थान पर आधारित है। "**मैं प्रभु तुम्हारा ईश्वर हूँ। मैं तुमको मिस्र देश की गुलामी के घर से, निकाल लाया।" (निर्गमन 20:2)**

मिस्र देश की गुलामी से इस्राएलियों की आजादी **(निर्गमन 12:37–42)**, चालीस साल की उनकी लम्बी यात्रा और उसके पश्चात् प्रतिज्ञात देश में उनका प्रवेश **(निर्गमन 15–योशुआ 5)**, ये सारी घटनाएं गहराई से जानने, प्रभु की उदारता को समझने, सुरक्षा और देखभाल महसूस करने का स्रोत हैं। प्रभु ने अपने लोगों की पुकार सुनी, उन्हें उनकी गुलामी से मुक्त किया, उन्हें भोजन और सुरक्षा प्रदान की, उस यात्रा के दौरान उनका अगुवाई किया और उन्हें प्रतिज्ञात देश पहुँचाया।

पहली घटना में, लोगों ने ईश्वर से उसकी करूणा के लिए गुहार लगायी। ईश्वर ने अपने लोगों की गुहार को सुना, मूसा और आरून को साधन बनाया, फिराऊन का सामना किया और मिस्र देश से अपने लोगों को आज़ाद कराया **(निर्गमन 4:10 – 11:10)**। लोगों को यह एहसास था कि वे ईश्वर से बहुत दूर हैं, उन्हें यह भी विश्वास था कि केवल ईश्वर ही उन्हें इन बन्धनों से मुक्त कर सकता है। चालीसा का समय हमें अपने जीवन पर मनन–चिन्तन करने और अपने हालातों पर विचार करने का मौका देता है। हम अपनी अन्तरात्मा से पूछें, क्या ईश्वर हमारे साथ है? क्या हम उनसे दूर हैं? क्या हम किसी प्रकार के बन्धन या गुलामी में हैं? ईश्वर के बिना हमारी स्थिति कितनी दयनीय है। सारे बन्धनों से मुक्त होने के लिए ईश्वर की शरण में जाने का यह उचित समय है।

दूसरी घटना में, प्रतिज्ञात देश पहुँचने से पहले, इस्राएलियों ने चालीस वर्षों की अपनी यात्रा में, ईश्वर को अपने सबसे अधिक नजदीक महसूस किया। ईश्वर ने उन्हें कभी भी अकेले नहीं छोड़ा; जब वे भूखे थे उन्हें भोजन दिया **(निर्गमन 16:1–36)**, जब वे प्यासे थे उन्हें पानी दिया **(निर्गमन 17:1–7)**। वे ईश्वर के विरूद्ध भुनभुनाते थे, उसके बावजूद ईश्वर हमेशा उनके साथ था, उन पर करूणा की और उन्हें क्षमा किया **(निर्गमन 32:1–35)**। ऐसा भी समय आया, जब उन्होंने अपने हालातों की तुलना मिश्र देश की गुलामी से की और उस जीवन को बेहतर समझा। चालीसा का समय, अपने जीवन के निर्जनस्थल से गुजरना है, एक ऐसा समय, जब ईश्वर हमारे जीवन के उतार–चढ़ाव में हमारा साथ देता है और हमें प्रतिज्ञात देश की ओर अग्रसर करता है। हमें इस अवधि को प्रभु के साथ गुजारना चाहिए। कभी–कभी हम निराश हो जाते हैं, लक्ष्यहीन होकर भटकते हैं, अपने जीवन में हमें सही दिशा से भटकना नहीं है, हमें ईश्वर को ढूँढना है और उनके साथ रहना है। दुर्भाग्य की बात यह है कि इस्राएली लोग जब

वे मरूस्थल में थे, मिस्र के क्षणिक सुखों और खुशियों को याद कर रहे थे। वे ईश्वर के प्रति अकृतज्ञ और अविश्वासी थे। हम उनके समान न बनें। यह चालीसा काल हमारे दुःखद अतीत से बाहर निकलने का और हर तरह के बन्धनों से मुक्त होने का समय है। आईए हम प्रभु के साथ चलें, उस जीवन को अपनायें, जो प्रभु हमें प्रदान करता है।

तीसरी घटना में, ईश्वर ने अपने लोगों को प्रतिज्ञात देश ले गये और उनका अपने लोगों से किया हुआ वादा पूरा किया। वह उन्हें मिस्र से बाहर लाया, मरूभूमि में उनके आगे–आगे रहकर, उन्हें प्रतिज्ञात देश ले गया। **"प्रभु दिन में उन्हें रास्ता दिखाने के लिए बादल के खम्भे के रूप में और रात को उन्हें प्रकाश देने के लिए अग्नि–स्तम्भ के रूप में आगे–आगे चलता था, जिससे वे दिन और रात में भी यात्रा कर सकें।" (निर्गमन 13:21)** वह वफादार ईश्वर है, वह प्रेमी पिता है, जो अपने बच्चों की देखभाल करता है। वह हमारी जरूरतों को जानता और पूरा करता है। समय पूरा होने पर वह हमारा उद्धार करेगा।

चालीसा काल परिवर्तन की अवधि है, स्वतन्त्रता का समय है। ईश्वर हमें स्वतंत्रता देने वाला है। वह हमें अपने सारे बन्धनों और पाप की गुलामी से बाहर निकालने के लिए तैयार है। उस स्वतंत्रता के लिए हमें सुख की क्षणिक इच्छा से दूर रहना होगा, अपने आपको उन गलत आदर्शों और मनोभावों से दूर करना होगा, जिन्हें हमने अपनी अज्ञानता के कारण सही मानते हुए आए हैं। हमें अपने स्वार्थी बर्ताव, अपने घातक नजरिये और पाप करने वाली प्रवृत्ति को त्यागना होगा। ये सब हमें कमजोर बना देते हैं। इस अवधि में हमें निर्जनस्थल का अनुभव होना चाहिए, ईश्वर के साथ रहना और उनके द्वारा सब कुछ पाना है। दूसरे शब्दों में, हमें प्रार्थना में ठहरने की जरूरत है। चालीसा काल के मनन–चिन्तन की प्रक्रिया, हमें प्रभु को खोजने में मदद करेगी और हममें नयी ऊर्जा का संचार करेगी।

हमारा चालीसा काल और इस अवधी के सारे आध्यात्मिक प्रयास अर्थपूर्ण तब होंगे, जब हम अपने जीवन की हकीकत को पहचानेंगे। हम अकेले नहीं हैं। क्या हम अपने आस–पास के लोगों की पुकार सुनते हैं जैसे प्रभु ने इस्राएलियों की सुनी थी? **"मैंने मिस्र में रहने वाली अपनी प्रजा की दयनीय दशा देखी और अत्याचारियों से मुक्ति के लिए उसकी पुकार सुनी है। मैं उसका दुःख अच्छी तरह जानता हूँ। मैं उसे मिस्रियों के हाथ से छुड़ाकर और इस देश से निकाल कर, एक समृद्ध और विशाल देश ले जाऊँगा, जहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं।" (निर्गमन 3:7–8)** हमारे समाज में दबे हुए, किनारे किए हुए लोगों की आवाज हमें सुनाई देनी चाहिए। उनके दर्द हमें परेशान करना चाहिए। उनके दर्द से हमें उनकी मदद करने के लिए प्रेरणा मिलनी चाहिए। यह चालीसा काल, ईश्वर हमसे प्रश्न पूछते हैं, तुम्हारा भाई कहाँ है? **(उत्पत्ति 4:9)** ईश्वर की नजर में हम सब भाई–बहिन हैं, इसलिए हमें एक–दूसरे के प्रति संवेदनशील बनने की जरूरत है। हमारे आस–पास के लोग हमारे साथी और सह–यात्री हैं।

आप सभी लोगों के लिए इस पवित्र चालीसा काल में ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि आप अपने हर तरह के बन्धनों से स्वतन्त्र हो जाएं और अपने भाई–बहनों को साथ लेकर ईश्वरोन्मुख जीवन बिताने की कृपा प्रभु आपको प्रदान करें।

एक बार फिर से आप सबलोगों को प्रभु येसु के नाम पर आर्शीवाद देते हुए और इस पुण्य अवधी को योग्यता के साथ मनाने की कृपा के लिए प्रार्थना करते हुए,

मसीह में आपका सेवक,

बिशप मैथ्यू नेल्लिकुन्नेल सी.एस.टी.
धर्माध्यक्ष, कैथोलिक धर्मप्रान्त, गोरखपुर

0551 - 2332723, +91-9569222157 ✉ dioceseofgorakhpur@gmail.com